योग्यता

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका

समकालीन साहित्य में मानव मूल्य

ज्ञान - विज्ञानं विमुक्तये

UGC Sponsored F.D.P

कार्यकारी संपादक :
डॉ. हरि राम प्रसाद पसुपुलेटी

गौरव संपादक :
डॉ. सि. कृष्ण

RAICHUR

Volume : 5 Special Edition : January - March 2019 ISSN : 2348 - 4225

- Social Sciences • Humanities
- Commerce & Management
- Language and Literature
- Law • Art • Development Studies

Yogyatha

International Referred Research Journal

Editor : Dr. D. Satya Latha

Yogyatha Publications

International Referred

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

कम सं	विषय	नाम
1	अंवेडकरवादी साहित्य और मानवमूल्य	जयप्रकाश कर्दम
2	समकालीन हिन्दी साहित्य में मानवमूलय	आचार्य आर एस सर्रराजु
3	व्यंग्य की आकामकता वनाम भ्रष्टाचार	आचार्य आई एन चंद्र शेखर रेडडी
4	रधुवीर सहाय की कविताओं में मानवमूल्य	आचार्य एस ए एस एस एन वर्मा
5	समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में सामाजिकन्याय	आचार्य एन सत्यनारायण
6	हिन्दी तेलुगु दलित कविता में प्रस्तावित सामाजिकन्याय	डॉ जि वी रत्नाकर
7	समकालीन साहित्य में मानवमूल्य	डॉ जयशंकरवावु
8	समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में मानवमूल्य	डॉ के नगेश्वरराव
9	सामाजिक सहयोग केलिए तडपती कामकाजी नारी	डॉ पम्स अख्तर
10	देवी उपन्यास में मानवमूल्यों का समर्थन	डॉ के कृष्णा
11	डॉ शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में चित्रित सामाजिकन्याय	वै वेंकटलक्ष्मि
12	समकालीन हिन्दी कविताओं में अभिव्यक्त मानवमूल्य	डॉ पि के जयलक्ष्मि
13	भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का स्थान	डॉ के श्याम सुन्दर
14	हिन्दी साहित्य में मानवमूल्य	ए विजयश्री
15	साहित्य और सामजिक समस्याएँ	डॉ एच अरूणा
16	नासिरा शर्मा के उपन्यासों में धार्मिक समन्वय	डॉ एस सूर्यावति
17	भारतीय संस्कृति की संवहिका हिन्दी	डॅ टि सुमति
18	डॉ अंवेडकर ः दलित और वौध्द धर्म में चित्रित दलित चेतना	डॉ इबरार खान
19	भ्रतृहरि नीति शतके जीनवमूल्यानि	डॉ के वि आर वि वि लक्ष्मि
20	पंचकावेपु समकालीन साहित्याचे व्यक्तित्व निर्माणस्च परिशीलनम	के दिनेश
21	सुसहत भारतम	डॉ पी श्रीवल्ली
22	ठंडा लोहा में अभिव्यक्त मानवमूल्य	अचार्य एस वि एस एस एन राजु
23	मन्नू भंडारी की कहानीयों में मानवमूल्य	डॉ डि नगेश्वरराव
24	समकालीन उपन्यासों में सामाजिक न्याय	डॉ सहिरा बानो
25	मानवमूल्य का स्वरूप	डॉ पी हरिराम प्रसाद - डॉ टि राजशेखर
26	लडाई ः भ्रष्टाचार विरोध - बनाम मानवमूल्य	डॉ प्रतिभा जी एमेकर
27	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना के संदर्भ	डॉ वि सरोजिनी
28	समकालीन हिन्दी कहानीयों में मानवीय संवंध	डॉ एस के बेनजीर

Scanned with OKEN Scanner

साहित्य और सामाजिक समस्याएँ

भूमिका : [1] साहित्य से हमारा अभिप्राय हित चिन्तन से है। इसमें विश्व कल्याण की भावना निहित होती है, पर आज साहित्य शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। साहित्य शब्द की व्याख्या करने से साहित्य के दो क्षेत्र सामने आते हैं एक व्यापक और दूसरा संकुचित। वाणी विस्तार और शब्द भण्डार की सीमा में आनेवाली प्रत्येक वस्तु साहित्य है। संकुचित अर्थ में साहित्य काव्य का पर्यापवाची हैं। साहित्य का व्यापक अर्थ उसकी उत्पत्ति पर और संकुचित अर्थ रूढ़ि पर आधारित है।

साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त विशाल है। मानव जीवन की विशालता ही साहित्य क्षेत्र की सीमा है। इस दृष्टिकोण से मानव अति महान है। अतः साहित्य की सीमाएँ भी अत्यंत विस्तुत हैं, उसमें काव्य, शास्त्र, इतिहास, पुराण, राष्ट्रप्रेम आदि सभी का समावेश होता है। साहित्यकार में कवि के अतिरिक्त अन्य भी अनेक गुणों का होना आवश्यक है।

मनुष्य की भीड़ को उसी तरह समाज नहीं कहा जा सकता जैसे सब्जियों या अनाज के एकत्रित सव्यूह को देर कहा जाता है कि पर समाज नहीं। वास्तव में समाज मनुष्यों के उस छोटे–बड़े समूह को कहा जाता है कि जो भावनात्मक स्तर पर आपस जुड़ा हुआ रहता है। उसके सुख–दुःख, उत्सव, त्योहार आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम, रीति–रीवाज परंपराएँ और नीतियाँ आदि सभी कुछ सम्मिलित हुआ करती हैं। यहाँ तक कि उनके हानि–लाभ में भी कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं हुआ करता। इस प्रकार की उन्नत परंपराओं, समृद्ध और उन्नत मन–मस्तिष्क भावृक समाज की ज्ञान, विज्ञान कला आदि के क्षेत्रों में जो अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ स्वीकार की गई हैं, साहित्य उन सब में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ स्वीकार की गई हैं, साहित्य उन सब में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ स्वीकार किया गया है। साहित्यकार कयोंकि समाज का ही हमेशा सजीव–सतर्क रहनेवाला भावृक किस्म का अंग होता है, इस कारण जीवन–समाज में जो कुछ भी छोटा–बड़ा, अच्छा–बुरा घटित हुआ करता हे, उसकी भावृक सम्वेदना उसे अवश्य ग्रहण करती और उसकी गहराई तक जाने का प्रयास किया करती है। सामान्य जनप्रायः ऐसी–ऐसी तो क्या, बड़ी–बड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं के घटित हो जाने के बाद प्रायः भूल जाया करता है। दूसरी और कवि–साहित्यकार उसी सब को अपने

PRINCIPAL
L.V.D. College, RAICHUR-03.
Scanned with OKEN Scanner

मनुष्य की सृष्टि है। इसीलिए हिन्दी भाषा के भाक्तिकाल के प्रमुख ज्ञानमार्गी शाखा के कबीर दास जी समाज को सुधारने के लिए कई ऐसी दोहों को सृजन किया ताकि समाज में निहित समस्याओं को कहीं–न–कहीं दूर कर सके। साहित्य समाज का दर्पण माना गया है।

आधुनिक काल के प्रसिद्ध कवि रामधारि सिंह दिनकर अपनी प्रसिद्ध कविता 'हिमालय' में अँग्रेजों के विरूद्ध में उनकी नीति अपनाने की बात पर समर्थन करते हुए कहा हैं कि –

"रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ

जाने दे उसको स्वर्ग धीर।"

कवि दिनकर कह रहे हैं कि युधिष्ठिर के स्थान पर गाण्डीवधारी अर्जुन और गादाधारी भीम को लौटा देने का अनुरोध किया है ताकि देश के द्रोहियों और अत्याचारियों से हिसाब–किताब बराबर किया जा सके। [1] इसीतरह प्रेमचन्द के उपन्यास गोदान में ग्रामीण समस्याओं को लेकर कई सांस्कृतिक धर्म–निरपेक्ष धारणाओं का उजागर किये गये हैं। इसमें वर्तमान में स्थित किसानों की आम्हत्याओं के मनुष्य कारण भी दिखाया गया है। आज सामाजिक स्थितियाँ बहुत बिगड़ गया है इसका वर्णन भी 'गोदान' उपन्यास के ज़रिए हमें बहुत खूब समझ सकते है। मद्यपान, जुआ, तकनीकी गलत इस्तेमाल, स्त्रीयों पर अत्याचार अमंक वाद आदि आज के समाज में निहित समस्याएँ हैं जो अकसर हमें साहित्य के सभी विधाओं में कहीं–न–कहीं उपलब्ध हो रही है।

संदर्भ :–

1. हिन्दी निबन्ध माला, पुस्तक का लेखक, प्रो. श्री शरण, पृ. सं. 12, 13, 14, 18, 19, 23.

डॉ. अरूण हेरेमत,
विभाग अध्यक्षा,
एल. वी. डी. कॉलेज,
रायपूर, कर्नाटक राज्य,
दूरभाषा : 08277622133

Scanned with OKEN Scanner